शिष्यता के अनिवार्य तत्व

आत्मिक नेतृत्व की अनिवार्य बातें
अध्ययन पुस्तिका

आत्मिक वरदान

अध्याय 4: दृढ़ बनाने वाले वरदान

परिचय

यह अध्याय आत्मिक वरदानों के शीर्षक वाले मॉड्यूल शिष्यत्व की अनिवार्य बातों का भाग है। इसमें पवित्रशास्त्र में वर्णित आत्मिक वरदानों की विस्तृत श्रंखला की जाँच की गई है और यह बताया गया है कि विश्वासी किस प्रकार परमेश्वर और उसके लोगों की सेवा में इन वरदानों का प्रयोग कर सकते हैं। आपको आपके और आपके आस–पास के दूसरे लोगों के आत्मिक वरदानों को पहचानने के बारे में मार्गदर्शन दिया जाएगा। सक्रियता से आपस में प्रेम करते और एक–दूसरे की सेवा करते समय कलीसिया की एकता इन अध्यायों का केन्द्र है। आपको परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए एक–दूसरे की सेवा करने और आत्मा एवं सत्य में आराधना करने के द्वारा अपने आत्मिक वरदानों का प्रयोग करने का प्रोत्साहन मिलेगा।

इस अध्ययन पुस्तिका का लक्ष्य यह है कि एक व्यक्ति स्वयं किसी विशिष्ट अध्याय को गहराई से देखे। इन अध्यायों का प्रयोग www.dehindi.org पर उपलब्ध वीडियो एवं ऑडियो उत्पादनों जैसी शिष्यत्व अनिवार्य कार्यक्रम की अन्य सामग्रियों के साथ किया जा सकता है।

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing

आत्मिक वरदान

अध्याय 4: दृढ़ बनाने वाले वरदान

यह क्या है?

इस अध्याय का उद्देश्य कलीसिया को दृढ़ बनाने वाले आत्मिक वरदानों का अनुसंधान करना है। इनमें प्रोत्साहन, चंगाई, परख, ज्ञान, भविष्यद्वाणी और रचनात्मकता शामिल है।

आपकी जानकारी के लिए...

प्रत्येक आत्मिक वरदान का कलीसिया में एक अद्वितीय स्थान होता है और प्रत्येक वरदान चेले बनाने के मिशन को पूरा करने में योगदान देता है। अन्य वरदानों के समान ही दृढ़ बनाने वाले वरदानों का प्रयोग भी स्वार्थी महत्वाकांक्षा की बजाय प्रेम से किया जाना चाहिए। ये वरदान कलीसिया को दृढ़ बनाते हैं और इनमें चंगाई (या अन्य आश्चर्यकर्म) और भविष्यद्वाणी जैसी सामर्थी योग्यताएँ शामिल होती हैं। यह सच है कि कुछ समुदायों में दूसरों की बजाय इन वरदानों को अधिक अनुभव किया जाता है परन्तु आवश्यकताओं में भिन्नता के कारण परमेश्वर का आत्मा "जिसे जो चाहता है बाँट देता है।" (1 कुरिन्थियों 12:11) परमेश्वर ने अपनी बुद्धि में यह नियुक्त किया है कि उसकी अधिकाँश आवश्यकताएँ दूसरों के द्वारा दी जाएँ ताकि समुदाय में हमें एक–दूसरे की आवश्यकता रहे। परमेश्वर चाहता है कि हम कलीसिया की एकता में योगदान दें और एक–दूसरे के साथ मिलकर कार्य करते हुए उसे मजबूती दें।

शुरूआत करना

1. एक–दूसरे से कहे जाने वाले हमारे शब्द कलीसिया की एकता को मजबूत कैसे बना सकते हैं? क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जिसके शब्दों से बुद्धि को प्रोत्साहन मिलता है या बुद्धि झलकती है?

2. रचनात्मक कलाओं ने किन तरीकों से मसीहियों के आपके समुदाय को मजबूत बनाया है? (संगीत, दृश्य कलाओं, नाटक और लेखन पर विचार करें।)

अध्ययन

❖ **दृढ़ बनाने वाले वरदान:** परमेश्वर का प्रेम संबंधों के सन्दर्भ में दूसरों के द्वारा अनुभव किया जाता है और कलीसिया उन सदस्यों से बनी है जो एक–दूसरे के प्रति परमेश्वर के प्रेम को अभिव्यक्त करते हैं। इस कारण जब एक कलीसिया के संबंध अनुग्रह और प्रेम से भरे होते हैं तो वह कलीसिया दृढ़ होती है। दृढ़ बनाने वाले वरदान विश्वास को बनाते हैं, परमेश्वर के प्रति हमारे प्रेम को बढ़ाते हैं और हमें हमारे ऊपर परमेश्वर के सतत् अनुग्रह की याद दिलाते हैं। हो सकता है चरवाही या सेवा के वरदानों की तरह दैनिक आधार पर उनका प्रयोग न किया जाए परन्तु वे अद्वितीय परिस्थितियों में आत्मा की अलौकिक सामर्थ का प्रदर्शन करते हैं।

आरम्भिक कलीसिया में मसीहियों के बहुत से समूहों (या कलीसियाओं) द्वारा दिए गए सन्देशों का परिणाम क्या था? प्रेरितों के काम 16:4–6 पढ़ें।

सारे वरदान कलीसिया को बनाने और दृढ़ करने के लिए दिए जाते हैं परन्तु इस अध्याय में दिए गए वरदानों का विशेष उद्देश्य उसे दृढ़ बनाना है। आत्मिक वरदानों के द्वारा कलीसिया किस प्रकार दृढ़ होती है? इफिसियों 4:11–16 पढ़ें और आप जो सीखते हैं उसे लिखें।

➢ **इसकी आवश्यकता क्यों है:** दृढ़ बनाने वाले वरदान लोगों के विश्वास को बनाने के द्वारा कलीसिया को मजबूत बनाते हैं। वे साधारण लोगों के द्वारा अलौकिक कार्य करवाने की परमेश्वर की असाधारण सामर्थ को भी प्रकट करते हैं।

- हम में से प्रत्येक व्यक्ति निराश हो सकता है और उसे प्रोत्साहन एवं बुद्धि की आवश्यकता पड़ सकती है।
- कलीसिया में कई बार दिशा का अभाव होता है और भविष्यद्वाणी या बुद्धि के वरदानों से भरे लोगों द्वारा परमेश्वर का विशिष्ट सन्देश सुनाए जाने से उसे लाभ होता है। रचनात्मक कलाएँ हमारी आत्मिक दशा के बारे में हमारी जानकारी को बढ़ाती हैं और आत्मा एवं सत्य में परमेश्वर की आराधना करने की हमारी योग्यता को बढ़ाती हैं।
- झूठे उपदेशक एक कलीसिया को नाश कर सकते हैं और परख के वरदान प्राप्त व्यक्ति झूठी शिक्षा और आत्मिक धोखे के विरूद्ध बचाव कर सकते हैं।

➢ **प्रेम से प्रयोग करने पर:** लोग आत्मा की प्रेरणा के प्रति संवेदनशील होंगे और दूसरों को जीवन को परिवर्तित करने वाले सत्यों को बताने की खोज में रहेंगे। जब दृढ़ बनाने वाले वरदानों का प्रयोग प्रेम में किया जाता है तो इस वरदान वाले लोग:

- साहस के साथ सत्य को बोलने के लिए आत्मा की क्षमता से भरे होंगे।
- लोगों को विश्वास और परमेश्वर के अनुग्रह के ज्ञान में बढ़ते हुए देखना पसन्द करेंगे।
- उस समुदाय से सच्चा प्रेम रखेंगे जिसे उन्होंने सुदृढ़ बनाया है।
- आत्मा को आश्चर्यजनक तरीकों से अपने द्वारा सामर्थी कार्य करने की अनुमति देंगे।
- सही और गलत, सच और झूठ को स्पष्टता से परख सकेंगे।

➢ **स्वार्थ के साथ प्रयोग करने पर:** जब इन वरदानों को पाने वाला व्यक्ति प्रेम में कार्य नहीं करता है तो वे कलीसिया को नहीं बनाते हैं। इसके फलस्वरूप:

- सत्य बोलते समय भी रूखे और आलोचनात्मक हो सकते हैं।
- पवित्र आत्मा की सामर्थ को सीमित करते हैं, आश्चर्यकर्मों की संभावना को कम करते हैं।
- रिश्तों का तनावपूर्ण होना या टूटना, स्वयं को अलग–थलग करना और विश्वासियों के बीच की एकता कम होना।
- यह सोचते हुए घमण्ड दिखाना कि वे दूसरों से श्रेष्ठ हैं।
- सत्य और झूठ के बीच पहचान करने में असमर्थता।

हम प्रेम की बजाय स्वार्थी इरादे से दूसरों को दृढ़ बनाने का प्रयास कर सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति प्रेम की बजाय स्वार्थी लाभों के लिए अपने वरदान का प्रयोग करता है तो वह कैसा होगा? वे क्या कर या कह सकते हैं? उनकी प्रेरणाएँ क्या हो सकती हैं?

❖ **दृढ़ बनाने वाले वरदानों का वर्णन:** परमेश्वर के लोगों को दृढ़ बनाने के लिए लोगों को तैयार करने के बहुत से तरीके हैं। निम्नलिखित रेखाचित्र में पवित्रशास्त्र से कुछ उदाहरणों की रूपरेखा दी गई है। प्रत्येक वरदान के लिए संक्षिप्त वर्णन को पढ़ें और फिर उसके बाद वाले वचन को देखें। आपको जो समझ में आता है उसे लिखें कि इस वरदान का प्रयोग कैसे किया जाना चाहिए और किसी व्यक्ति द्वारा इस वरदान के प्रयोग के धर्मशास्त्रीय उदाहरण से आपको क्या सीखने को मिलता है।

प्रोत्साहन का वरदान	
यह क्या है	यह वरदान एक व्यक्ति को दूसरों पर भरोसे को मौखिक रूप अभिव्यक्त करने में समर्थ बनाता है, यह जानते हुए कि क्या कहना है और कब कहना है। यह प्रोत्साहन दूसरों में परमेश्वर के वरदानों की पहचान करता है और उन्हें उन वरदानों का प्रयोग करने की प्रेरणा देता है। यह हिचकिचाने वालों को ऊर्जा देता है, डरने वालों को मनोबल और धैर्य देता है, और सब में विश्वास को बनाता है।
मुख्य प्रेरणा	*भले कामों में लगे रहने के लिए परमेश्वर के लोगों को प्रोत्साहित देखना।*
आप कह सकते हैं	• अक्सर लोगों में किसी वरदान को देखने पर मैं उन्हें बताता हूँ और प्रोत्साहित करता हूँ। • जब मैं निराश लोगों को देखता हूँ तो उन्हें यह बताने के लिए व्यवहारिक तरीकों को खोजता हूँ कि वे प्रिय हैं और उनके लिए प्रार्थना हो रही है। • मैं किसी ऐसे व्यक्ति का सामना कर सकता हूँ या चुनौती दे सकता हूँ जो उस प्रकार नहीं जी रहा है जैसे उसे जीना चाहिए और सही जीवन के लिए प्रोत्साहित कर सकता

	हूँ।
कलीसिया में प्रयोग	युवाओं या बच्चों की सेवकाई, काउन्सलिंग, लोगों से मुलाकात करना, लघु समूह अगुवा
प्रोत्साहन और प्रोत्साहन देने वालों के बारे में आप जो सीखते हैं उसे लिखें	
इब्रानियों 10:24–25	
1 थिस्सलुनीकियों 2:11–12	
प्रेरितों 15:30–32	

परख का वरदान	
यह क्या है	यह वरदान एक व्यक्ति की यह देखने में सहायता करता है कि क्या सही और सच है और धोखे एवं त्रुटि से उसकी पहचान में सहायता करता है। वे झूठे शिक्षकों को पहचान सकते हैं, धोखेबाज की पहचान कर सकते हैं, यह परख सकते हैं कि पवित्र आत्मा है या दुष्टात्मा, और आत्मिक युद्ध में दूसरों का बचाव कर सकते हैं।
मुख्य प्रेरणा	*यह देखना कि लोग सही और गलत को पहचानें और परमेश्वर के लोगों की सुरक्षा करना*
आप कह सकते हैं	• किसी के प्रचार करते या सिखाते समय मैं गलतियों, विसंगतियों या झूठी शिक्षा को जल्दी ही पकड़ सकता हूँ। • मैं लोगों की सच्ची प्रेरणाओं को देख सकता हूँ चाहे उन्हें इसकी जानकारी न हो। • मेरे अन्दर परमेश्वर की उपस्थिति और आत्मिक गतिविधि का एक उच्च अहसास है। • मेरे अन्दर सही और गलत की गहरी समझ है।
कलीसिया में प्रयोग	पुरनिए, प्रार्थना सेवकाई, काउन्सलिंग, लघु समूह अगुवा, शिक्षक
परख और परखने वालों के बारे मे आप जो सीखते हैं उसे लिखें	
1 कुरिन्थियों 12:10	
1 यूहन्ना 4:1–6	
मत्ती 16:21–23	

रचनात्मक संवाद का वरदान	
यह क्या है	यह वरदान एक व्यक्ति को प्रभावी रूप से सत्य को बताने और कला के विविध रूपों के द्वारा लोगों को परमेश्वर की गहरी समझ की ओर आकर्षित करने में समर्थ बनाता है। इन कला के रूपों में संगीत रचना या प्रदर्शन, दृश्य कला, लेखन या कहानी बताना, नाटक या अन्य रचनात्मक गतिविधियाँ शामिल हैं जिनके द्वारा श्रोताओं को आत्मिक उन्नति, भरोसा, आशीष और मार्गदर्शन मिलता है। ये कलीसिया में सामूहिक आराधना में योगदान करते

	और उसके बढ़ावा देते हैं।
मुख्य प्रेरणा	*यह देखना कि लोग परमेश्वर के सत्यों को नए तरीकों से जानें*
आप कह सकते हैं	• मुझे शब्दों, संगीत या दृश्य माध्यमों के संबंध में अत्यधिक हुनर मिला है। • लोग मुझे बताते हैं कि मेरे कार्यों से उन्हें परमेश्वर के सत्यों को नए तरीकों से जानने में सहायता मिलती है। • जब मैं अपनी कला का अभ्यास करता हूँ तो मुझे लगता है कि मैं परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा कर रहा हूँ।
कलीसिया में प्रयोग	आराधना अगुवा, संगीतकार, भवन डिजाइन, कलाकार, लेखक, नाटककार, नाट्य सेवकाई, गीतकार, पत्रकार, आराधना स्थल की डिजाइन।
रचनात्मक संवाद और कलाकारों के बारे में आप जो सीखते हैं उसे लिखें	
भजन 33:3	
कुलुस्सियों 3:16	
निर्गमन 35:30–35	

ज्ञान और बुद्धि के वरदान	
यह क्या है	यह वरदान एक व्यक्ति को परमेश्वर के वचन और उसके मार्गों की अलौकिक बुद्धि और ज्ञान को व्यक्त करने में समर्थ बनाता है। वे उसके वचन को आसानी से समझ सकते हैं, सत्यों को याद कर उन्हें लागू कर सकते हैं और इस जानकारी को दूसरों के सामने प्रस्तुत करने की योग्यता रखते हैं। यह परिस्थितियों और समस्याओं से बुद्धि के साथ बोलने और धर्मशास्त्रीय शिक्षा को लागू करने की परमेश्वर द्वारा दी गई योग्यता है।
मुख्य प्रेरणा	*परमेश्वर के वचन को जानना और उसे प्रकट करना।*
आप कह सकते हैं	• मेरे अन्दर बाइबल और सत्य की गहराई में उतरने के प्रति गहरा प्रेम है। • मेरे अन्दर उसे आसानी से याद करने की योग्यता है जिसे मैं ने अतीत में सीखा है। • कई बार मुझे किसी समस्या या परिस्थिति के बारे में ऐसा ज्ञान मिलता है जिसे मैं परमेश्वर के पवित्र आत्मा के बिना नहीं जान सकता था। • मैं बाइबल के सत्य को दैनिक जीवन की परिस्थितियों में लागू कर सकता हूँ।
कलीसिया में प्रयोग	काउन्सलिंग, कलह समाधान, शिष्यत्व का निदेशक, लघु समूह अगुवा, शिक्षक, पुरनिया, लेखक, परामर्शदाता, पासबान, कलीसियाई पुस्तकालयाध्यक्ष
ज्ञान और बुद्धि के बारे में आप जो सीखते हैं उसे लिखें	
1 कुरिन्थियों 1:18–31	
1 कुरिन्थियों 8:1	

कुलुस्सियों 1:9	

चंगाई और आश्चर्यकर्मों के वरदान	
यह क्या है	ये वरदान लोगों को अपनी प्रार्थना या कार्यों के द्वारा पवित्र आत्मा द्वारा किए जाने वाले अलौकिक चंगाई और चमत्कारों को करने में समर्थ बनाते हैं। चंगाई और चमत्कार करने की सामर्थ केवल परमेश्वर की ओर से है, किसी व्यक्ति में नहीं है– वे केवल एक माध्यम हैं। ये वरदान शारीरिक या आत्मिक चंगाई का रूप ले सकते हैं और इनमें दूसरे आश्चर्यकर्म भी शामिल होते हैं।
मुख्य प्रेरणा	*परमेश्वर की सामर्थ को आश्चर्यजनक रूप से कार्य करते देखना*
आप कह सकते हैं	• मेरी प्रार्थना के द्वारा मैं ने लोगों को बीमारी से चंगाई पाते देखा है। • मुझे टूटे लोगों पर गहरा तरस आता है और मैं चाहता हूँ कि परमेश्वर उन्हें पहले जैसा बनाए। • लोग मुझे नियमित रूप से उनकी आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना करने के लिए कहते हैं और हम परमेश्वर को उन प्रार्थनाओं का उत्तर देते हुए देखते हैं। • मुझे विश्वास है कि परमेश्वर अपनी इच्छानुसार आश्चर्यजनक रूप से चंगाई दे सकता है या पारम्परिक दवाईयों के प्रयोग द्वारा।
कलीसिया में प्रयोग	प्रार्थना सेवकाई, मिलने जाना, पुरनिया या पासबान, चिकित्सकीय सेवकाई
चंगाई और आश्चर्यकर्मों के बारे मे आप जो सीखते हैं उसे लिखें	
प्रेरितों 3:1–10	
प्रेरितों 4:5–22	
प्रेरितों 5:12–16	

भविष्यद्वाणी का वरदान	
यह क्या है	यह वरदान एक व्यक्ति को तुरन्त परमेश्वर से एक सन्देश पाने और उसे बताने या एक विशेष सत्य को प्राप्त करने और उसे कलीसिया के निर्माण के लिए उपयुक्त तरीके से बताने में समर्थ बनाता है। यह सार्वजनिक सन्देश या लोगों के बीच निजी बातचीत के रूप में हो सकता है परन्तु यह कभी भी बाइबल का विरोध करता या उसमें कुछ बढ़ाता नहीं है। गलती और दुविधा की प्रवृत्ति वाले मनुष्य द्वारा की जाने के कारण भविष्यद्वाणी का अधिकार परमेश्वर के वचन से सिखाने के समान नहीं है और परिपक्व विश्वासियों द्वारा उसकी पुष्टि की जाती है कि वह सही है या नहीं।
मुख्य प्रेरणा	*जीवनों को परिवर्तित होते हुए देखने के लिए परमेश्वर द्वारा दिए गए सत्य की घोषणा करना*
आप कह सकते हैं	• मैं परमेश्वर के सत्य को बोलने और लोगों को पाप का बोध कराने से हिचकिचाता नहीं हूँ। • कई बार किसी व्यक्ति या परिस्थिति के बारे में मुझे कोई विशेष ज्ञान मिलता है और

	मेरे लिए परमेश्वर के सन्देश को बताना जरूरी होता है। • लोग मुझ से पूछते हैं, "आपको वही बात कैसे पता चली जिसे मुझे सुनने की आवश्यकता थी?" या "आपको मेरे बारे में यह बात कैसे पता चली?" • मुझे कई बार किसी स्वप्न का अर्थ बताया जाता है।
कलीसिया में प्रयोग	सुसमाचारक, उपदेशक या वक्ता, पुरनिया, पासबान, लेखक, काउन्सलर
भविष्यद्वाणी और भविष्यद्वक्ताओं के बारे मे आप जो सीखते हैं उसे लिखें	
2 पतरस 1:20–21	
1 कुरिन्थियों 12:29–31	
2 पतरस 1:16–21	

❖ **सेवा करने वालों के लिए सलाह:** कलीसिया को सफलतापूर्वक दृढ़ बनाने के लिए हमें कलीसिया के अन्दर व्यक्तियों पर ध्यान देना चाहिए। हमें अपनी आँखें खुली रखनी चाहिए कि क्या कमजोर है: क्या विश्वास की कमी है? सुसमाचार के प्रति उत्साह की कमी है? गलतफहमी पर आधारित विभाजन है? समझ, बुद्धि या सत्य की कमी है? दृढ़ बनाने वाले वरदान व्यक्तियों के साथ–साथ समूह की विभिन्न कमजोरियों को संबोधित करते हैं, इसीलिए छिपाने की बजाय इन वरदानों का प्रयोग किया जाना चाहिए। ज्ञान या परख या भविष्यद्वाणियों को स्वयं तक सीमित रखने का कोई लाभ नहीं है। यदि हमारे अन्दर कलात्मक वरदान है तो उस वरदान के उद्देश्य को पूरा करने के लिए समय पर उसका उपयोग किया जाना चाहिए। निम्नलिखित वचन कलीसिया को दृढ़ बनाने और तैयार करने के बारे में क्या कहते हैं और बल कहाँ से मिलता है?

2 कुरिन्थियों 13:11	
इफिसियों 2:11–22	
1 कुरिन्थियों 1:10–31	

❖ **उपसंहार:** कलीसिया को बहुत से वरदान दिए गए हैं परन्तु दृढ़ बनाने वाले वरदान विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे कलीसिया को वह देते हैं जो आवश्यक है, विश्वासियों के हृदय, मन और आत्मा को बल देते हैं। सही और गलत के बीच पहचान करने की और दुविधा के समय परमेश्वर की बात को स्पष्टता से सुनने की योग्यता अपने मिशन को पूरा करने में कलीसिया की सहायता करेगी। परमेश्वर के समयोचित वरदानों से प्राप्त सत्य को शिक्षण, रचनात्मक कलाओं, भविष्यद्वाणी के वचनों या प्रोत्साहन के द्वारा बताने से उन लोगों को सहायता मिलेगी जो भयभीत हैं या जिन्हें विश्वास के साथ आगे बढ़ने में डर लगता है। परमेश्वर से प्राप्त और नम्रता से बताए गए सत्य के सन्देश की सामर्थ को कभी भी कम न आँकें।

साराँश

- परमेश्वर अपनी कलीसिया को आत्मिक वरदान देता है तो बल देते हैं, उत्साह देते हैं, और सत्य बताते हैं।
- दृढ़ बनाने वाले वरदानों का प्रयोग व्यक्तियों और कलीसिया को दृढ़ बनाने के लिए किया जाता है। उनका उद्देश्य केवल तभी पूरा होता है जब स्वयं तक सीमित रखने की बजाय उनका प्रयोग किया जाता है।
- दृढ़ बनाने वाले कुछ वरदान प्रोत्साहन, परख, रचनात्मक संवाद, चंगाई, ज्ञान और भविष्यद्वाणी हैं।

विचार के लिए प्रश्न

1. चंगाई और आश्चर्यकर्मों के वरदान (जिनके लिए हम परमेश्वर पर निर्भर होते हैं कि वह अपने अनुग्रह के माध्यम के रूप में हमारा प्रयोग करे) उन वरदानों से किस प्रकार भिन्न हैं जिन्हें हम प्रयोग करने के लिए चुनते हैं, जैसे प्रोत्साहन या शिक्षा?

2. जब एक व्यक्ति को कोई वरदान मिलता है और वह उसका प्रयोग नहीं करता तो क्या होता है?

3. आप अपने समुदाय में कहाँ लोगों को दृढ़ बनाने वाले वरदानों का प्रयोग करते हुए देखते हैं?